द्वितीय परिपत्र / Second Circular

प्राचीन इतिहास पुरातत्त्व एवं संस्कृति विभाग

दीनदयाल उपाध्याय गोरखपुर विश्वविद्यालय, गोरखपुर

महायोगी गोरखनाथ विश्वविद्यालय गोरखपुर

आरोग्य धाम, बालापार रोड, सोनबरसा, गोरखपुर एवं

महाराणा प्रताप महाविद्यालय

जंगल धूसड़, गोरखपुर के संयुक्त तत्वावधान में आयोजित

उत्तर प्रदेश :
कल, आज और कल

विषयक

दो दिवसीय राष्ट्रीय संगोष्ठी

संशोधित तिथि : 23-24 अक्टूबर, 2026

सेवा में,

श्रीयुत् ______________________________

____

____

प्रेषक :

डॉ. प्रदीप कुमार राव

कुलसचिव, महायोगी गोरखनाथ विश्वविद्यालय गोरखपुर

आरोग्य धाम, बालापार रोड, सोनबरसा

गोरखपुर, उत्तर प्रदेश-273007

सम्पर्क सूत्र : 8299765209, 9952971570, 8423706228

प्रेषित तिथि : 4 फरवरी, 2026

द्वितीय परिपत्र / Second Circular

4 फरवरी, 2026 को जारी

प्राचीन इतिहास पुरातत्त्व एवं संस्कृति विभाग

दीनदयाल उपाध्याय गोरखपुर विश्वविद्यालय, गोरखपुर

महायोगी गोरखनाथ विश्वविद्यालय गोरखपुर

आरोग्य धाम, बालापार रोड, सोनबरसा, गोरखपुर

एवं

महाराणा प्रताप महाविद्यालय

जंगल धूसड़, गोरखपुर

के संयुक्त तत्वावधान में आयोजित

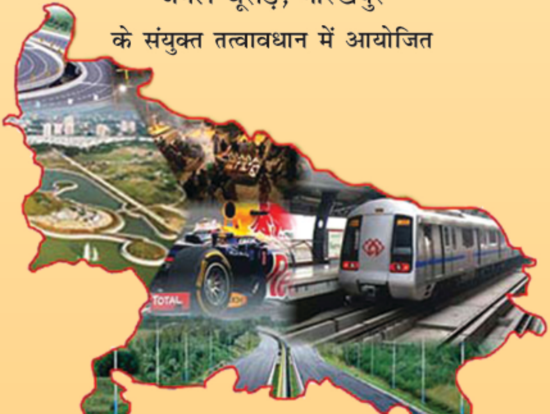

उत्तर प्रदेश : कल, आज और कल

विषयक

दो दिवसीय राष्ट्रीय संगोष्ठी

संशोधित तिथि : 23-24 अक्टूबर, 2026

आयोजन स्थल

महायोगी गोरखनाथ विश्वविद्यालय गोरखपुर

आरोग्य धाम, बालापार रोड, सोनबरसा, गोरखपुर

उत्तर प्रदेश : कल, आज और कल

24 जनवरी 1950 सा.सं. को संयुक्त प्रांत का नाम परिवर्तित कर उत्तर-प्रदेश नामक एक नवीन राज्य सृजित हुआ। सुदूर अतीत से लेकर 1950 सा.सं. तक उत्तर-प्रदेश अनेक परिवर्तनों एवं उतार-चढ़ाव से होकर गुजरा है। पुरापाषाणिक मानव जिसे हम प्रथम भारतीय भी कह सकते हैं, ने मिर्जापुर की शैलमालाओं में अपना आश्रय बनाया। इन्हीं शैलमालाओं में रहते हुए चित्रों एवं उपकरणों के रूप में अपनी अभिव्यक्तियाँ छोड़ीं। शिकार एवं संग्राहक अवस्था से आगे बढ़ते हुए कृषि एवं पशुपालन की कला का अनुसंधान किया। मोटे अनाज, जिसे भारत सरकार ने श्री अन्न का नाम दिया है, की उपज से आगे बढ़ते हुए आरम्भिक मानव धान उपजाने लगा। यहीं से उत्तर-प्रदेश का मानव आत्मनिर्भर होते हुए सभ्यता के अगले चरण में प्रवेश किया, जहाँ से गतिशील अर्थव्यवस्था, धर्म, संस्कृति, राज्य, राजनीति की नाना सरणियों का विकास हुआ। उत्तर-प्रदेश में पुरापाषाण काल से लेकर आज तक मानव-बसाव के अविछिन्न विभिन्न चरण प्राप्त होते हैं। यह भू-भाग जिसे आज उत्तर-प्रदेश कहते हैं-जम्बूदीप, आर्यावर्त, उत्तरापथ, भारतवर्ष, मध्यदेश, अन्तर्वेदी, उत्तर-पश्चिमी प्रान्त (1836), संयुक्त प्रान्त आगरा और अवध, संयुक्त प्रान्त आदि नाम से अभिहित हुआ।

उत्तर-प्रदेश सम्पूर्ण भारतवर्ष के सांस्कृतिक कलेवर का उत्स रहा है। यह रामायण, महाभारत, आथर्वणिक संस्कृति, सांख्य दर्शन, जैन, बौद्ध, शैव, वैष्णव एवं शाक्त तथा समस्त भारतीय दर्शनों, पन्थों, सन्तों, योगियों, साधकों एवं ऋषियों की उत्सभूमि रही है। कुरु-पांचाल एवं कोशल-मिथिला का सांस्कृतिक केन्द्र जिसका विस्तार सम्पूर्ण भारतवर्ष में हुआ, उत्तर-प्रदेश में ही विकसित हुआ। उत्तर-प्रदेश लोकतन्त्र का प्राचीनतम प्रयोगशाला रहा है। राजतन्त्र, गणतन्त्र, जनजातीय राज्य, जनपदीय राज्य, नगर राज्य आदि विभिन्न राज्य पद्धतियों का विकास भी यहीं हुआ। कभी सम्पूर्ण शासन भारतवर्ष के सुरक्षा का दायित्व सम्भालने वाले सूर्यवंशी, चन्द्रवंशी एवं नागवंशी क्षत्रियों का उद्भव स्थल भी उत्तर-प्रदेश ही था। उत्तर-प्रदेश छठीं सदी सा.सं.पू. के राजनैतिक परिदृश्य से लेकर गाहडवालों, कल्चुरियों, मलयकेतुओं एवं सावर्णियों के राजनीतिक इतिहास का साक्षी रहा है। इसके पश्चात मुस्लिम शासन एवं ब्रिटिश कालीन शासन-व्यवस्था का अनुभव भी किया है। पुराणों में गंगा-यमुना अन्तर्वेदी को सृष्टि का नाभिक केन्द्र माना गया है। इस प्रकार हम देखते हैं कि उत्तर-प्रदेश भौतिक एवं वैचारिक दोनों ही दृष्टियों से अत्यन्त समृद्ध रहा है। भारतीय ज्ञान परम्परा का बहुत सा हिस्सा उत्तर प्रदेश के गंगा, सरयू, यमुना, बेतवा, अचिरावती एवं सदानीरा नदी घाटियों में विकसित हुआ। उत्तर-प्रदेश के अन्तर्गत कई भू-राजनीतिक एवं सांस्कृतिक इकाईयाँ थीं। यथा-पांचाल, काशी, कोशल, सरयूपार, दरदगण्डकी, उत्तर-समुद्र, टीकर, टकारी आदि। यहाँ के प्रसिद्ध तीर्थस्थल-काशी, प्रयाग, विन्ध्याचल, मथुरा, बिठूर, गढ़मुक्तेश्वर इत्यादि हैं। यहाँ के मेले प्रदेश भर में फैले, आंचलिक संस्कृति का प्रतिनिधित्व करते हैं। इस प्रदेश में विशेष अवसरों पर आयोजित होने वाला कुम्भ मेला विश्व के आकर्षण का केन्द्र रहा है। यहाँ की धार्मिक चेतना समाजिक-जीवन के प्रत्येक क्षेत्र को प्रभावित करती है। यह प्रदेश आथर्वण, अंगिरस, च्यवन, वाल्मीकि, बुद्ध, महावीर स्वामी, महायोगी गोरखनाथ, संत कबीर आदि ऋषियों एवं संतों का प्रदेश है। यहाँ की लोक चेतना भी काफी जीवन्त रही है। यह समृद्ध वाचिक परम्परा का प्रदेश रहा है। यहाँ प्रचलित लोकोक्तियों, कहावतों एवं लोक कथाओं में जीवन्त संस्कृति प्रतिबिम्बित है। अद्यावधि इसका व्यवस्थित संकलन नहीं हो सका है।

1857 सा.सं. के प्रथम स्वतन्त्रता आन्दोलन का अलख भी इसी प्रदेश में जगा था। देश के स्वतंत्रता आन्दोलन में इस प्रदेश का योगदान अप्रत्याख्येय है। यहाँ के स्वतन्त्रता सेनानियों की सूची अत्यन्त विस्तृत है। इस प्रदेश के किसानों, मजदूरों एवं महिलाओं तक ने स्वतंत्रता आन्दोलन में भाग लिया था।

उत्तर-प्रदेश सुदीर्घ अतीत का वंशधर है। स्वतन्त्रता की प्राप्ति के बाद 1950 सा.सं. में आधुनिक उत्तर-प्रदेश का अस्तित्व कायम हुआ। 1950 सा.सं. से लेकर आज तक निरन्तर विकसित होता हुआ उत्तर-प्रदेश आज भारत वर्ष की सबसे बड़ी अर्थव्यवस्था एवं समृद्ध प्रदेश बना हुआ है। आज उत्तर-प्रदेश सरकार ने विकसित उत्तर-प्रदेश 2047 का लक्ष्य रखते हुए अर्थव्यवस्था को 06 ट्रिलियन डालर तक पहुँचाने का लक्ष्य रखा है। निःसन्देह योग, आयुर्वेद, पर्यटन, शिल्प, दस्तकारी, शिक्षा आदि के क्षेत्र में उत्तर-प्रदेश का महत्वपूर्ण योगदान है। आज की तिथि में उ.प्र. शिक्षा, संचार, शोध, आधारभूत संरचना, अवस्थापना, उद्योग, कृषि, पर्यटन, नगरीय विकास, जलापूर्ति, ग्रामविकास एवं चिकित्सा के क्षेत्र में अभूतपूर्व विकास किया है। यहाँ विकास के साथ-साथ पर्यावरण की संरक्षा का भी ध्यान दिया गया है। उत्तर-प्रदेश में नहरों के जाल के साथ ही नदियों की स्वच्छता, वनों एवं जीव-जन्तुओं के संरक्षण का भी ध्यान दिया गया है। प्रदेश में प्रकृति मैत्री के साथ विकास का आदर्श उदाहरण प्रस्तुत किया जा रहा है।

1947 सा.सं. में डॉ. रमेश चन्द्र मजूमदार के ग्रन्थ 'हिस्ट्री ऑफ बंगाल' के प्रकाशित होने के साथ ही क्षेत्रीय इतिहास लेखन की परम्परा का विकास हुआ। तबसे लेकर आज तक क्षेत्रीय इतिहास लेखन का बहुत विकास हुआ है। आज तक क्षेत्रीय इतिहास लेखन जारी है। उत्तर-प्रदेश के विभिन्न अंचलों पर अवश्य कुछ आंचलिक इतिहास लेखन का कार्य हुआ है, किन्तु आज तक उत्तर-प्रदेश का व्यवस्थित इतिहास प्रस्तुत न हो सका। इस राष्ट्रीय संगोष्ठी का उद्देश्य उत्तर-प्रदेश के इतिहास, संस्कृति एवं विकास पर समग्रता के साथ विचार किया जायेगा। इस राष्ट्रीय संगोष्ठी में निम्नलिखित बिन्दुओं पर विचार किया जायेगा-

1. उत्तर-प्रदेश का ऐतिहासिक भूगोल, प्रमुख नदियाँ, स्थल अभिधान एवं 75 जिलों का मानचित्र।
2. उत्तर-प्रदेश का राजनीतिक इतिहास।
3. स्वतन्त्रता प्राप्ति के पश्चात का शासन-प्रशासन।
4. उत्तर-प्रदेश की सांस्कृतिक विरासत, प्रमुख तीर्थ-स्थल, प्रमुख धार्मिक विश्वास, स्थानीय देवी-देवता, प्रमुख मन्दिर।
5. लोकगीतों में भारतीय संस्कृति की चेतना।
6. प्रमुख मेले-उत्सव।
7. कुम्भ।
8. उत्तर-प्रदेश का समाज : आव्रजन एवं प्रव्रजन।
9. उत्तर-प्रदेश की प्रमुख कला।
10. उत्तर-प्रदेश की कला, स्थापत्य, चित्रकला, अभिलेख एवं मुद्राएँ।
11. इतिहास-पुराण परम्परा एवं इतिहास-पुराण परम्परा के आर्ष ग्रन्थ।
12. उत्तर-प्रदेश के संत एवं दार्शनिक।
13. उर्जा के क्षेत्र में उत्तर-प्रदेश।
14. संचार के क्षेत्र में उत्तर-प्रदेश।
15. उत्तर-प्रदेश में पर्यटन की स्थिति एवं सम्भावनाएँ।
16. उत्तर-प्रदेश के उद्योग।
17. उत्तर-प्रदेश में नगर-विकास।
18. उत्तर-प्रदेश में शिल्प-व्यवस्था।
19. रोजगार के अवसर एवं सम्भावनाएँ।
20. आधारभूत नागरिक सुविधाएँ।

Uttar Pradesh: Past, Present and Future

On January 24, 1950, the United Provinces were renamed Uttar Pradesh, and a new state was created. From the distant past until 1950, Uttar Pradesh underwent numerous changes and ups and downs. Paleolithic humans, whom we can also call the first Indians, made their abode in the rock formations of Mirzapur. While living in these rock formations, they left their expressions in the form of paintings and tools. Moving beyond hunting and gathering stage, they researched the art of agriculture and animal husbandry. Progressing from the cultivation of coarse grains, which the Government of India has named 'Shri Anna', early humans began cultivating paddy. From this point, the people of Uttar Pradesh became self-reliant and entered the next stage of civilization, where various channels of dynamic economy, religion, culture, state, and politics developed. In Uttar Pradesh, continuous and distinct phases of human settlement are found from the Paleolithic period to the present day. This region, which is today called Uttar Pradesh, has been known by names such as Jambudweep, Aryavarta, Uttarapatha, Bharatvarsha, Madhyadesha, Antarvedi, North-Western Provinces (1836), United Provinces of Agra and Oudh, and United Provinces.

Uttar Pradesh has been the source of the cultural fabric of the entire Bharatvarsha. It has been the birthplace of Ramayana, Mahabharata, Atharvanic culture, Samkhya philosophy, Jainism, Buddhism, Shaivism, Vaishnavism, Shaktism, and all Indian philosophies, sects, saints, yogis, practitioners, and sages. The cultural centers of Kuru-Panchal and Koshal-Mithila, which expanded throughout Bharatvarsha, developed in Uttar Pradesh. Uttar Pradesh has been the oldest laboratory of democracy. Various state systems such as monarchy, republic, tribal states, Janapada states, and city-states also developed here. Uttar Pradesh was also the origin place of the Suryavanshi, Chandravanshi, and Nagvanshi Kshatriyas, who bore the responsibility for the security of the entire Bharatvarsha. Uttar Pradesh has been a witness to the political landscape from the 6th century BCE to the political history of the Gahadavalas, Kalachuris, Malayketus, and Savarnis. Subsequently, it has also experienced Muslim rule and British colonial administration. In the Puranas, the Ganga-Yamuna Doab is considered the nuclear center of creation. Thus, we see that Uttar Pradesh is physically and ideologically it has been extremely rich from both perspectives. A significant portion of the Indian knowledge tradition developed in the river valleys of Ganga, Yamuna, Betwa, Achiravati, and Sadanira in Uttar Pradesh. Uttar Pradesh comprised several geo-political and cultural units, such as Panchal, Kashi, Koshal, Sarayupar, Dardagandaki, Uttar-Samudra, Teekar, Takari, etc. The famous pilgrimage sites here include Kashi, Prayag, Vindhyachal, Mathura, Vidur, Mathura, Garhmukteshwar, and others. The fairs held here represent the regional culture spread across the state. The Kumbh Mela, organized on special occasions in this state, has been a center of global attraction. The religious consciousness here influences every aspect of social life. This is the land of sages and saints like Atharvan, Angiras, Chyavan, Valmiki, Buddha, Mahavir Swami, Mahayogi Gorakhnath, Sant Kabir, etc. The folk consciousness here has also been quite vibrant. This has been a state with a rich oral tradition. The vibrant culture is reflected in the proverbs, sayings, and folk tales prevalent here. A systematic compilation of these has not yet been possible.

The spark of the first independence movement of 1857 was also ignited in this state. The contribution of this state to the country's freedom movement is undeniable. There is a long list of freedom fighters from this state. Even the farmers, laborers, and women of this state participated in the freedom movement.

Uttar Pradesh is an heir to a long past. After achieving independence, modern Uttar Pradesh came into existence in 1950. Continuously developing since 1950, Uttar Pradesh is today the largest economy and a prosperous state in India. Today, the Uttar Pradesh government has set a target of achieving a developed Uttar Pradesh by 2047, aiming to boost its economy to 6 trillion. Undoubtedly, Uttar Pradesh has made significant contributions in the fields of Yoga, Ayurveda, tourism, handicrafts, education, etc. Today, it has achieved unprecedented development in education, communication, research, basic infrastructure, industry, agriculture, tourism, urban development, water supply, rural development, and healthcare. Along with development, attention has also been paid to environmental protection here. In Uttar Pradesh, along with a network of canals, attention has also been given to the cleanliness of rivers, and the conservation of forests and wildlife. An example of development in harmony with nature is being presented.

With the publication of Dr. Ramesh Chandra Majumdar's book 'History of Bengal' in 1947, the tradition of regional history writing developed. Since then, regional history writing has seen significant development and continues to this day.

Some regional history writing has certainly been done on various regions of Uttar Pradesh. However, a systematic history of Uttar Pradesh has not yet been presented. The objective of this national seminar is to comprehensively discuss the history, culture, and development of Uttar Pradesh. The following points will be considered in this national seminar:

1. Historical Geography of Uttar Pradesh, major rivers, place names, and map of 75 districts.
2. Political history of Uttar Pradesh.
3. Governance and administration after independence.
4. Cultural heritage, major pilgrimage sites, prominent religious beliefs, local deities, major temples.
5. Consciousness of Indian culture in folk songs.
6. Major fairs.
7. Kumbh.
8. Society of Uttar Pradesh: Immigration and Emigration.
9. Major art of Uttar Pradesh.
10. Art, architecture, painting, inscriptions, and coins found in Uttar Pradesh.
11. History-Puranic tradition. Ancient texts of the History-Puranic tradition.
12. Saints and Philosophers of Uttar Pradesh.
13. Uttar Pradesh in the energy sector.
14. Uttar Pradesh in the communication sector.
15. Status and potential of tourism in Uttar Pradesh.
16. Industries of Uttar Pradesh
17. Urban Development in Uttar Pradesh
18. Craft System in Uttar Pradesh
19. Employment Opportunities and Prospects
20. Basic Civic Amenities

पंजीकरण :

संगोष्ठी के प्रतिभागियों का पंजीकरण शुल्क रूपये 700.00 (सात सौ रूपये मात्र) तथा शोध छात्रों एवं विद्यार्थियों के लिए रूपये 500.00 (पाँच सौ रूपये मात्र) निर्धारित है।

भोजन एवं आवास

आयोजन मण्डल द्वारा भोजन एवं आवास की नि:शुल्क व्यवस्था की जायेगी।

शोध-पत्र

प्रतिभागियों से अनुरोध है कि सेमिनार में केवल मौलिक एवं अप्रकाशित शोध-पत्र ही स्वीकार किये जायेंगे। ये शोध पत्र नए आयामों, तथ्यों पर आधारित होने चाहिए। अत: अपने शोध-पत्र Email- rajawant.anhist@ddugu.ac.in पर 15 जुलाई, 2026 तक अवश्य भेज दें जिससे प्रकाशन में सुविधा हो सके।

भाषा

शोध-पत्र हिन्दी (कृतिदेव 10) तथा अंग्रेजी (Times New Roman) भाषा में ही स्वीकार किये जायेंगे।

गोरखपुर के बारे में

शिवावतारी महायोगी गुरु गोरखनाथ की तपस्थली के रूप में विख्यात गोरखपुर पूर्वी उत्तर प्रदेश के प्रसिद्ध शहरों में से एक है। गोरखपुर का नाम नाथ संप्रदाय के प्रख्यात संत महायोगी गुरु श्रीगोरखनाथ के नाम पर ही पड़ा है। यहाँ का गोरखनाथ मंदिर, नाथ संप्रदाय का केंद्र है जो देशभर के लोगों के आस्था का एक प्रसिद्ध तीर्थस्थल है। गोरखपुर पूर्वोत्तर रेलवे का मुख्यालय भी है और देश के बाकी हिस्सों से रेल, सड़क तथा हवाई मार्गों के माध्यम से अच्छी तरह से जुड़ा हुआ है।

गोरखपुर, उत्तर प्रदेश के विभिन्न ऐतिहासिक और सांस्कृतिक स्थलों के केंद्र में भी स्थित है। कपिलवस्तु (सिद्धार्थनगर में पिपरहवा) जैसा प्रसिद्ध पुरास्थल, जहाँ गौतम बुद्ध बड़े हुए और अपने जीवन के प्रारम्भिक 29 वर्षों तक आध्यात्मिक पथ पर आगे बढ़ते रहे, कुशीनगर, जहाँ गौतमबुद्ध ने महापरिनिर्वाण प्राप्त किया; मगहर, जहाँ कबीरदास जी ने समाधि ली; चौरीचौरा (गोरखपुर) जहाँ माँ भारती के लिए सपूतों ने स्वतंत्र भारत का स्वप्न देखते हुए अपने प्राणों की आहूति दी, का शहीद स्मारक है। ये सभी राष्ट्रीय संगोष्ठी स्थल से 90 किलोमीटर की परिधि में स्थित है। गोरखपुर से नेपाल की राजधानी काठमाण्डू 500 किमी दूर है। सम्मेलन में भाग लेने वाले यात्रा प्रेमी यहाँ से सड़क या हवाई मार्ग द्वारा आसानी से इन स्थलों की यात्रा कर सकते हैं।

गोरखपुर में अक्टूबर के महीने में मौसम सुहावना होता है, रातें थोड़ी ठंडी होती हैं लेकिन सर्दियों के हल्के कपड़े पर्याप्त होते हैं। शहर की परिधि के भीतर गोरखनाथ मन्दिर, गीता वाटिका, गीता प्रेस, विष्णु मन्दिर, मानसरोवर मन्दिर, रेल संग्रहालय, तारामंडल, रामगढ़ झील में लक्जरी क्रूज, शहीद अशफाक उल्लाह खान प्राणि उद्यान, बौद्ध संग्रहालय, विनोद वन, विंध्यवासिनी पार्क आदि कई आकर्षक पर्यटन स्थल हैं।

हम सम्मेलन में आपकी सक्रिय भागीदारी और मार्गदर्शन की प्रतीक्षा कर रहे हैं। हमारा मानना है कि बुद्धिजीवियों की सम्मानित उपस्थिति सम्मेलन को सफल बनाएगी।

परामर्शदात्री समिति

- श्री अवनीश अवस्थी, सलाहकार, माननीय मुख्यमंत्री, उ.प्र. शासन
- डॉ. जी.एन. सिंह, पूर्व औषधि महानियंत्रक, भारत सरकार
- डॉ. के.वी. राजू, सलाहकार, माननीय मुख्यमंत्री, उ.प्र. शासन
- पद्मश्री (प्रो.) विश्वनाथ प्रसाद तिवारी, पूर्व अध्यक्ष, साहित्य अकादमी, नई दिल्ली (2024)
- प्रो. सुरेंद्र दुबे, पूर्व कुलपति, सिद्धार्थ विश्वविद्यालय, कपिलवस्तु, सिद्धार्थनगर, उ.प्र.
- प्रो. श्रीप्रकाशमणि त्रिपाठी, पूर्व कुलपति, इं.गां.रा.ज.वि.वि., अमरकंटक, म.प्र.
- प्रो. पी. नाग, पूर्व कुलपति, दी.द.उ. गोरखपुर विश्वविद्यालय, गोरखपुर, उ.प्र.
- प्रो. वी.के. सिंह, पूर्व कुलपति, दी.द.उ. गोरखपुर विश्वविद्यालय, गोरखपुर, उ.प्र.
- प्रो. योगेंद्र सिंह, पूर्व कुलपति, जननायक चंद्रशेखर विश्वविद्यालय, बलिया, उ.प्र.
- प्रो. जे.पी पांडे, कुलपति, अ.क. प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय, लखनऊ, उ.प्र.
- प्रो. के.एन. सिंह, कुलपति, दक्षिणी बिहार केंद्रीय विश्वविद्यालय, बिहार
- प्रो. संजीव शर्मा, पूर्व कुलपति, महात्मा गाँधी केंद्रीय विश्वविद्यालय, मोतिहारी, बिहार
- प्रो. जे.पी सैनी, कुलपति, म.मो.मा. प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय, गोरखपुर, उ.प्र.
- प्रो. मुरली मनोहर पाठक, कुलपति, ला.ब.शा.सं. विश्वविद्यालय, नई दिल्ली
- प्रो. मदन लाल ब्रह्म भट्ट, कुलपति, हे.नं.ब. चिकित्सा विश्वविद्यालय, उत्तराखंड
- प्रो. मज़हर आसिफ, कुलपति, जामिया मिलिया विश्वविद्यालय, नई दिल्ली
- प्रो. संजीत गुप्ता, कुलपति, जननायक चंद्रशेखर विश्वविद्यालय, बलिया, उ.प्र.
- प्रो. के. रामचंद्र रेड्डी, कुलपति, म.गु.गो. आयुष विश्वविद्यालय, गोरखपुर, उ.प्र.
- प्रो. कविता शाह, कुलपति, सिद्धार्थ विश्वविद्यालय, कपिलवस्तु, सिद्धार्थनगर, उ.प्र.
- प्रो. शोभा गौड़, कुलपति, माँ विंध्यवासिनी विश्वविद्यालय, मिर्जापुर
- प्रो. रवि शंकर सिंह, कुलपति, माँ पाटेश्वरी विश्वविद्यालय, बलरामपुर, उ.प्र.
- प्रो. सदानंद प्रसाद गुप्त, पूर्व कार्यकारी अध्यक्ष, उत्तर प्रदेश हिंदी संस्थान, लखनऊ, उ.प्र.
- प्रो. राजशरण शाही, आचार्य, शि.शा. विभाग, भी.अं. केंद्रीय विश्वविद्यालय, लखनऊ, उ.प्र.
- प्रो. गोपाल प्रसाद, पूर्व अध्यक्ष एवं आचार्य, राज.शा. विभाग, दी.द.उ. गोरखपुर विश्वविद्यालय, गोरखपुर, उ.प्र.
- प्रो. धनजी प्रसाद, आचार्य, भाषा विज्ञान, केंद्रीय हिन्दी संस्थान, नई दिल्ली
- डॉ. अनंत नारायण भट्ट, वरिष्ठ वैज्ञानिक, डीआरडीओ
- प्रो. संतोष शुक्ला, आचार्य, संस्कृत एवं प्राच्य भाषा विभाग, ज.ने. विश्वविद्यालय, नई दिल्ली
- प्रो. विपुला दुबे, पूर्व आचार्य, दी.द.उ. गोरखपुर विश्वविद्यालय, गोरखपुर, उ.प्र.
- प्रो. योगेंद्र सिंह, आचार्य, हिंदी एवं आधु.भा.भा. विभाग, इलाहाबाद केंद्रीय विश्वविद्यालय, प्रयागराज, उ.प्र.
- पद्मश्री (डॉ.) राम चेत चौधरी, कृषि वैज्ञानिक (2024)

आयोजन समिति

मुख्य संरक्षक

मा. योगी आदित्यनाथ जी महाराज

मुख्यमंत्री, उत्तर प्रदेश शासन

संरक्षक

प्रो. पूनम टंडन

मा. कुलपति, दीनदयाल उपाध्याय गोरखपुर विश्वविद्यालय, गोरखपुर

डॉ. सुरिन्दर सिंह

मा. कुलपति, महायोगी गोरखनाथ विश्वविद्यालय गोरखपुर
आरोग्य धाम, बालापार रोड, सोनबरसा, गोरखपुर

अध्यक्ष एवं संयोजक

प्रो. राजवन्त राव

पूर्व अध्यक्ष एवं आचार्य, प्राचीन इतिहास, पुरातत्त्व एवं संस्कृति विभाग
दीनदयाल उपाध्याय गोरखपुर विश्वविद्यालय, गोरखपुर

विभागाध्यक्ष

प्रो. प्रज्ञा चतुर्वेदी

प्राचीन इतिहास, पुरातत्त्व एवं संस्कृति विभाग
दीनदयाल उपाध्याय गोरखपुर विश्वविद्यालय, गोरखपुर

प्राचार्य

डॉ. मनीष त्रिपाठी

महाराणा प्रताप महाविद्यालय, जंगल धूसड़, गोरखपुर

सह संयोजक

डॉ. पद्मजा सिंह

सहायक आचार्य, प्राचीन इतिहास, पुरातत्त्व एवं संस्कृति विभाग
दीनदयाल उपाध्याय गोरखपुर विश्वविद्यालय, गोरखपुर

डॉ. सुबोध कुमार मिश्र

अध्यक्ष, प्राचीन इतिहास, पुरातत्त्व एवं संस्कृति विभाग
महाराणा प्रताप महाविद्यालय, जंगल धूसड़, गोरखपुर

आयोजन सचिव

डॉ. मणिन्द्र यादव

सहायक आचार्य, प्राचीन इतिहास, पुरातत्त्व एवं संस्कृति विभाग
दीनदयाल उपाध्याय गोरखपुर विश्वविद्यालय, गोरखपुर

डॉ. विनोद कुमार

सहायक आचार्य, प्राचीन इतिहास, पुरातत्त्व एवं संस्कृति विभाग
दीनदयाल उपाध्याय गोरखपुर विश्वविद्यालय, गोरखपुर